

२३० नभारुगवर्गगज्ज्योतीवकुम्भ
कभकस्मिन्समयकगवान्मन्त्र
केश्वरज्जोगिनागस्वेष्टात्तद्व्य
ममाभिमममायनैद्यज्जम्भकम्भ
कुम्भयःवदश्यवकश्कश्कश्यम्भ
श्कश्कश्यश्कश्कश्यश्कश्कश्यश्क
वैष्णविकानांः शुद्धमानसि

आर्य समाज	
311	I
ARYA ARCHIVES	

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

१०

सुलावनहं हृदय ॥ ॐ निवृत्त ३ मूलमकु ४ ॥ ॥ ॐ विनिमिलिः ललित हं हृदय ॥ संकावनमकु
॥ ८०९ ॥ ॐ ॐ वरुण गह्वरी राहिविपचनपिधीख ४ ३ स ४ २ वधुमहामनाष्टपयतिस्त्राहा ॥ ॥
ॐ हृदकावहं हृदय २ हा २ हं हृदय ॥ ॐ निःसंगानकीउतमकु ॥ ॥ ॐ सर्वविद्याधिपकथपनय
कुमकुनामभसर्वेयकिनीनामभय २ मखकीलय २ हं हृदय ॥ ॐ निःसंगवकुपवधमकु ४ ॥
॥ ॐ कालाकनावदनः हस २ हलाहलवज्रसूवजः हृन २ हृवयः २ सर्वमवधवागृष्टिं
मूय २ हृकय २ य ४ ३ य ४ ३ सर्ववानी ॥ भाषय २ हं हृदय ॥ ॐ तत्सर्वं जपुं वलाक्वाकमघान
टयति ॥ ॥ ॐ वज्रिनिवजं पातय स्रपतिनाहापयतिः काल २ ॐ वधुमहामनाष्टपयतिः ॥

गच्छन्ति अहमदीमायक पश्यन्नावाकस्येव विद्यायां जडिपह ॥ काकनखायकमन्द
 ओ३० काक केरुनी कुञ्जनाखाहा ॥ कन्दरुं जाकनरुञ्जावमचधुन हासमाहाययति
 हृदय ॥ ०० तिमरुं काकयं च तालिखाक ॥ ०० कनमोद ॥ ॥ अथ ॥ तदस्यैव कृद्वि
 कपजो हसनस्य पद्मे दिवा जने नीमक कस्य माल्यं जनच ॥ ०० नवक ॥ गङ्गा पदपद
 धातुं नीवहिममृदिताङ्गी ०० त्यक्तस्य मनु ४ ॥ ०३ ओकय २ मोहाय २ नमः किंवर्ग कृन्
 खाहा ॥ उदव कीटं संगच्छ भस्मवर्ध ॥ निकानयक ॥ अमिताह ॥ अः नामिका न कनसह
 वाटेकाहृत्वा पूर्वोक्तमनुधा हिम ॥ खानपानदोह वयं वध्वं रुवेति न गीसय ४ ॥ मरुप

१२

नमस्कृतिस्त्रिहं धनदानपियधा किंवहं नाकृतके वसानसंग्रहं किमयेधा कवहं विनय
 उवहा विनात्मकनेवं सिध्दि ॥ ॥ अथ मधुलविधानं रुवजा कृत्वा ॥ लिमलापकं
 गङ्गी मरुदानकं सम्यक् नानापूष्यपा ॥ अहिकं ॥ अमुकपि गितसमायुक्तं कालि ॥ नसम
 पुरं ॥ अहिविक्ता न ह्यारुकरे वंसर्वसाधनं ॥ ॥ गङ्गा नादीत्या नकुयथा रुदान गायक ॥ इइव
 कृये त्रिहं वं कालि ॥ नपव गय ॥ सर्वमतसंध्य कलमकुल जातः ॥ पुनरुका नगनाय
 निष्ठा यगताय भनधीय ॥ ॥ य गेय ह कुमिदं वजं ॥ एक जेवी वस साधनं ॥ व ॥ गलावयत न
 कलध्यापक सत्रिहं ॥ उच्चाटनमवधे ॥ कुमाना ॥ कुरु सनिहं नीलं वर्ध ॥ गवय माह कर्मक

म्माकनम्यास्थितं कन्यादिभर्तृकर्मविश्वलवाक्षपुमादन ॥ १ ॥ विनालकलाव्यधवा
 वगयद्दुविवाहदद्व ॥ २ ॥ विनिर्बकनवीनपुनिर्बकनमसहृदि लासनामाहिमन
 यसमाफ ॥ ३ ॥ ॥ अचलाहिमनपुनिर्ब ॥ ४ ॥ इति निर्वन्गीधिसदावंधेद्व ॥ ५ ॥ काकपादा
 नामिनि ॥ ६ ॥ यधमादुपलावाः रुडनयांनथागणः रुडन ॥ ७ ॥ रुडन ॥ ८ ॥ रुडन ॥ ९ ॥ रुडन ॥ १० ॥
 महाधवनं ॥ ११ ॥ ॥ निरिविर्बकापवाहनययाधीवजावाकर्मगानन्दवाय ॥ १२ ॥ रुडन ॥ १३ ॥
 रुडनचतुर्द ॥ १४ ॥ रुडनचतुर्द ॥ १५ ॥ रुडनचतुर्द ॥ १६ ॥ रुडनचतुर्द ॥ १७ ॥ रुडनचतुर्द ॥ १८ ॥ रुडनचतुर्द ॥ १९ ॥ रुडनचतुर्द ॥ २० ॥

आश्विन शुक्ल

311

I